International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.11 No.4 March – April 2024

जनसंचार माध्यम और हिंदी

श्रीमती माधुरी परशुराम कांबळे
श्रीमती सी.बी.शाह महिला महाविद्यालय सांगली.
Corresponding Author - श्रीमती माधुरी परशुराम कांबळे
DOI - 10.5281/zenodo.10940951

मनुष्य समाजशील प्राणी होने के कारण समाज के अभाव में वह जीवन की कल्पना नहीं कर सकता. समाज में एक दूसरे से संप्रेषण का माध्यम भाषा ही है. लोगों को आपस में जोड़े रखने का महत्वपूर्ण कार्य भाषा ही करती है. वर्तमान युग में वैश्वीकरण के कारण पूरा विश्व एक दूसरे के समीप खड़ा नजर आता है. इसमें महत्वपूर्ण भूमिका जनसंचार माध्यम निभाते हैं. इसके माध्यम से विश्व में कहीं भी घटित घटना को पल भर में प्राप्त किया जा सकता है. मनुष्य की किसी भी बात को जानने के लिए उसकी गहराई में जाने की जिज्ञासा होती है, और इसी जिज्ञासा से मनुष्य जनसंचार माध्यम का उपयोग करता है. वर्तमान युग में संचार माध्यम मनुष्य जीवन के आवश्यक अंग बन गए हैं. यह केवल लोगों के मनोरंजन का साधन नहीं अपितु समूचे विश्व की जानकारी देने का माध्यम है.

जनसंचार माध्यम अलग-अलग समाज को एक दूसरे से जोड़ने का महत्वपूर्ण स्रोत है. प्राचीन काल से ही मनुष्य संचार से जुड़ा है. प्राचीन समय में समूहों के माध्यम से मनुष्य एक दूसरे से जुड़ा रहता था. डॉ. अंबादास देशमुख लिखते हैं "भारत में जनसंचार की अवधारणा काफी पुरानी है भारतीय पौराणिक साहित्य में इसके अनेक उदाहरण देख जा सकते हैं श्री पी.एन मलहन ने भारत की जनसंचार व्यवस्था को महर्षि नारद तथा संजय जैसे चरित्र से जोड़कर मौर्य वंश तथा मध्यकालीन भारत के संचार व्यवस्था का विस्तार से वर्णन किया है."[1] इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि संचार तथा मीडिया का इस्तमाल प्राचीन काल से ही होता नजर आता है.

राष्ट्र की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा के रूप में हिंदी अपनी अहम भूमिका निभा रही है. भारत जैसे विभिन्न भाषाई देश में सबको एक साथ रखने का महत्वपूर्ण कार्य हिंदी के माध्यम से किया जाता है. हिंदी में युग के अनुसार जो परिवर्तन हो रहे हैं उसे हिंदी का विकास होता नजर आता है. डॉ. संध्या मोहिते लिखती है "प्रांत के अनुसार हिंदी अपना रूप बदलती है परंतु उसकी आत्मा एक ही है जो जनसंपर्क का कार्य करती है मीडिया में हिंदी भाषा अपनी आंचलिक गरिमा को कायम रखे हुए हैं विधाओं के अनुसार और

लोकरुचि के अनुसार उसमें परिवर्तन होते हैं परंतु फिर भी अपना अलग स्थान बना रही है."[2]

वर्तमान युग में कंप्यूटर, मोबाइल के उपयोग से आपसी संवाद के अवसर प्रदान करने वाला सोशल मीडिया एक माध्यम बन चुका है. इसका उपयोग सोशल मीडिया से जुड़े संसाधनों पर आधारित प्रौद्योगिकी के माध्यम से किया जाता है. सोशल मीडिया के उपादानों का निर्माण होने पर सबसे पहले अंग्रेजी भाषा का प्रयोग ही किया जाता था. जिससे अन्य भाषा भाषियों के लिए यह एक बाधा लगती थी. किसी भी देश को उसकी भाषा से पहचाना जाता है, और यह पहचान सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा से ही प्राप्त होती है. हिंदी राजभाषा होने के कारण भारत के प्रत्येक राज्य में बोली समझी जाती है. भाषा के द्वारा साहित्य के साथ-साथ जन संवाद भी उभर कर सामने आते हैं. वर्तमान इंटरनेट के युग में फेसबुक, ट्विटर, ब्लॉग, टेलीग्राम, व्हाट्सएप पर भी हिंदी भाषा का प्रसार हो रहा है. हिंदी सोशल मीडिया पर संचार के एक सशक्त माध्यम के रूप में मजबूत पकड़ बना रही है.

जनसंचार माध्यमों के कारण व्यक्ति की दूसरों से संपर्क स्थापित करने की क्षमता को बढ़ावा मिल रहा है. आज बच्चे ही नहीं पुरानी पीढ़ी के लोगों में भी यह माध्यम लोकप्रिय होते नजर आते हैं. शहरों में ही नहीं देश के कोने-कोने में विकास के लिए तकनीकी के प्रयोग को बढ़ावा मिलना आवश्यक है. इसके लिए सबसे सशक्त माध्यम हिंदी ही है. समाज में ज्ञान को बढ़ाने के लिए उसे सूचना की कसौटी पर कसना आवश्यक है. डॉ. मीरा निचळे लिखती है " हम ना चाहते हुए भी सूचनाओं के घेरे में रहते हैं यह सूचनाएँ हमें विभिन्न माध्यमों के द्वारा प्राप्त होती है. क्योंकि हिंदी विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है निजीकरण उदारीकरण और भूमंडलीकरण के कारण बहुराष्ट्रीय कंपनियों का प्रारंभ भारत में हुआ और समूचे विश्व में हिंदी क्षेत्र का बहुत बड़ा उपभोक्ता क्षेत्र सामने आया."[3]

यह कहना अत्युक्ती नहीं होगा कि संचार माध्यम का प्रभाव वर्तमान समाज में बढ़ रहा है, यह माध्यम मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है. रेडियो कंप्यूटर इंटरनेट टेलीविजन आदि इन माध्यामो के अंतर्गत आते है.

समाचार पत्र :

दैनंदिन जीवन में मनुष्य विभिन्न जनसंचार माध्यम का प्रयोग करता है. उसमें प्रमुख भूमिका समाचार पत्रों की रहती हैं. देश की ताजा स्थिति की जानकारी इसी के माध्यम से होती हैं. भाषा की दृष्टि से अगर देखा जाए तो अंग्रेजी में छपने वाले समाचार पत्रों से ज्यादा हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में छपने वाले समाचार पत्र अधिक दिखाई देते हैं. एक ही समाचार पत्र में शिक्षा, प्रशिक्षण, वाणिज्य, व्यापार, विज्ञान, खेलकूद, मनोरंजन के साथ-साथ दैनंदिन घटनाओं की जानकारी एक साथ प्राप्त होती है. समाचार पत्रों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि वह आसानी से कहीं भी प्राप्त होते हैं. और उसका इस्तमाल कहीं भी किसी भी समय किया जा सकता है. इनमें समाचारों के साथ-साथ हल्के-फुल्के चुटकुले, अभिलेख भी शामिल होते हैं. इनमें छापने

वाली जानकारी विश्वसनीय होती है ऐसे कहा जा सकता है.

दूरदर्शन:

दूरदर्शन संचार का प्रभावी माध्यम है क्योंकि जो कुछ आंखों से दिखाई देता है उसके लिए अधिक भाषा की जरूरत नहीं होती. आज समाज में हर घर में दूरदर्शन पहुंच चुका है. दूरदर्शन हिंदी भाषा के प्रसार की दृष्टि से महत्वपूर्ण जिम्मेदारी का निर्वाह कर रहा है. दूरदर्शन पर हजारों चैनल चलते हैं जिसका प्रभाव जनमानस पर होता है और इन चैनलों में हिंदी भाषा के चैनलों की संख्या सबसे अधिक है. जिससे हिंदी भाषा को हर घर में पहुंचने का कार्य किया जाता है दूरदर्शन मनुष्य की रोजमर्रा की जरूरत बन चुका है. डॉक्टर अंम्बादास देशमुख कहते हैं " चित्र के माध्यम से जितने विस्तृत परिवेश तथा वातावरण से दर्शक सुपरिचित तथा प्रभावित हो जाता है, उतना सुपरिचित तथा प्रभाव समाचार पत्र या रेडियो से पढ़ने या सुनने से नहीं पड पाता. सिनेमा, दूरदर्शन तथा वीडियो फिल्म इस दृष्टि से अधिक प्रभावकारी सिद्ध हुए हैं."[4]

रेडियो:

रेडियो मुख्य रूप से श्रव्य माध्यम के अंतर्गत आता है श्रोता केवल वक्ता की आवाज सुन सकते हैं. श्रव्य माध्यम शाब्दिक वर्णन और विवरण के लिए उपयोगी सिद्ध होते हैं. रेडियो पर मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान विज्ञान की बातें भी पहुंचाई जाती है. इसके साथ-साथ साहित्य का प्रसारण भी किया जाता है. इन प्रसारण माध्यम के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग अधिक मिलता है. जिससे आम जनता तक अपनी बात आसानी से पहुंचाई जाती है. प्रत्येक प्रांत के आकाशवाणी में हिंदी में प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की संख्या अधिक दिखाई देती है. डॉ संध्या मोहिते लिखती है "हिंदी भाषा के अखिल भारतीय स्वरूप का निर्माण आकाशवाणी से प्रसारित समाचार बुलेटिन से हुआ है समाचारों की भाषा का प्रभाव शुद्धता स्पष्ट और सरलता के कारण अधिक स्पष्ट रूप से होता है."[5] इससे यह स्पष्ट होता है कि आकाशवाणी की भूमिका हिंदी के विकास में अहम है. रेडियो ने अनपढ़ तथा आम आदमियों तक कविता, कहानी,गोष्टी के माध्यम से हिंदी भाषा पहुंचने का बड़ा कार्य किया है. कभी-कभी लोग अनपढ होने के कारण पढ़ नहीं पाते हैं. लेकिन रेडियो पर उपन्यास कहानी पठन के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं, जिससे निरक्षर भी साहित्य की जानकारी हासिल करता है. अखिल भारत में हिंदी भाषा का प्रसार रेडियो के माध्यम से किया जाता है. आज भी देहात हो या शहर रेडियो को रुचि के साथ सुना जाता है.

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम:

भूमंडलीकरण के इस युग में अंग्रेजी भाषा कितनी ही सशक्त हो लेकिन संचार माध्यमों ने हिंदी को ही स्वीकार किया है. आज कंप्यूटर, मोबाइल के सॉफ्टवेयर में हिंदी भाषा में कार्य किया जा सकता है. हिंदी केवल साहित्य ही नहीं मनोरंजन ज्ञान विज्ञान तंत्रज्ञान की भाषा बन गई है. इंटरनेट पर कोई

भी जानकारी की खोज करनी है तो उसे आसानी से हिंदी में प्राप्त किया जा सकता है. इतना ही नहीं सरकार तथा विभिन्न मंत्रालय की ओर से दी जाने वाली सूचनाओं भी हिंदी में प्राप्त होती है.

वर्तमान युग में जनसंचार माध्यम व्यक्ति जीवन के अभिन्न अंग बन गए हैं. अधिकतर युवाओं की संख्या सोशल मीडिया पर अधिक दिखाई देती है. जिसमें हिंदी का प्रयोग लोगों को अधिक आकर्षित करता है. आज के युग में व्हाट्सएप मैसेज तथा अन्य तरह के मैसेज के लिए अलग-अलग कंपनियाँ हिंदी भाषा का सहारा लेती दिखाई देती है. जिससे हिंदी के विकास में बढ़ावा मिल रहा है. जनसंचार मध्यामो में हिंदी ने अपनी अलग पहचान बनाई है. समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन, फिल्मे आदि में हिंदी ही छाई है. आज घर घर में सामान्य जनता तक हिंदी इन प्रसार मध्यामो के जरीए पहुंच चुकी है. डिजिटल दुनिया में भी हिंदी पिछे नही है.

संदर्भ :

1. डॉप्रयोजानमुलक ,अम्बादास देशमुख. शैलजा प्रकाशन ,हिंदी अधुनातन आयाम -कानपूर112006 द्वितीय संस्करण,, पृष्ठ367
2. डॉ. संध्या मोहिते, मीडिया साहित्य और सामाजिक सरोकार, ए.बी.एस. पब्लिकेशन, वाराणसी प्रथम संस्करण 2017, पृष्ठ 44
3. डॉ.मीरा नीचळे, माध्यम साहित्य तथा भाषा : विविध आयाम, ए.बी.एस. पब्लिकेशन, वाराणसी प्रथम संस्करण 2016, पृष्ठ 120
4. डॉप्रयोजानमुलक ,अम्बादास देशमुख. शैलजा प्रकाशन ,हिंदी अधुनातन आयाम -कानपूर112006 द्वितीय संस्करण,, पृष्ठ 402
5. डॉसंध्या मोहिते ., मीडिया साहित्य और सामाजिक सरोकार .एस.बी.ए , वाराणसी प्रथम संस्करण ,पब्लिकेशन 2017, पृष्ठ 46